नाम कैसा हो—

नामकी संरचना कैसी हो, इस विषयमें भी गृह्यसूत्रों एवं स्मृतियोंमें विस्तारसे प्रकाश डाला गया है। पारस्करगृह्यसूत्र (१।१७।२-३)-में बताया गया है—**'द्व्यक्षरं चतुरक्षरं वा घोषवदाद्यन्तरन्तस्थम्। दीर्घाभिनिष्ठानं कृतं कुर्यान्न तद्धितम्॥ अयुजाक्षरमाकारान्तं स्त्रियै तद्धितम्॥'**

इसका तात्पर्य यह है कि बालकका नाम दो या चार अक्षरयुक्त, पहला अक्षर घोषवर्णयुक्त (वर्गका तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण), मध्यमें अन्त:स्थवर्ण (य,र,ल,व आदि) और नामका अन्तिम वर्ण दीर्घ एवं कृदन्त हो, तद्धितान्त न हो। यथा देवशर्मा, शूरवर्मा आदि। कन्याका नाम विषमवर्णी तीन या पाँच अक्षरयुक्त, दीर्घवर्णान्त एवं तद्धितान्त होना चाहिये यथा श्रीदेवी आदि।

वीरमित्रोदय-संस्कारप्रकाशमें चार प्रकारके नामका विधान आया है—१-कुलदेवतासे सम्बद्ध, २-माससे सम्बद्ध, ३-नक्षत्रसे सम्बद्ध तथा ४-व्यावहारिक नाम—**'तच्च नाम चतुर्विधम्। कुलदेवतासम्बद्धं माससम्बद्धं नक्षत्रसम्बद्धं व्यावहारिकं चेति।'**

धर्मसिन्धुमें चार प्रकारके नाम बताये गये हैं—१-देवनाम, २-मासनाम, ३-नक्षत्रनाम तथा नक्षत्रके चार चरणोंके आधारपर नाम और ४-व्यावहारिक नाम (पुकारनेका नाम)।

देवनाम—रामदास, कृष्णानुज आदि।

चैत्रादि मासनाम—वैकुण्ठ, जनार्दन, उपेन्द्र आदि।

नक्षत्रनाम—नक्षत्रके नामसे अथवा नक्षत्रोंके स्वामियोंके नामसे। यथा—अश्वयुक्, कार्तिक आदि।

नक्षत्रचरणोंके आधारपर—

अश्विनीसे लेकर रेवतीतक २७ नक्षत्र होते हैं। प्रत्येक नक्षत्रके चार चरण होते हैं। एक नक्षत्र प्रायः ६० घटी रहता है। इस प्रकार एक चरण १५ घटीका होता है। जिस समय पुत्र या पुत्रीका जन्म होता है, उस समय इष्टकालके अनुसार जिस नक्षत्रके जिस चरणमें जन्म होता है, उस चरणमें जो अक्षर अवकहडाचक्रके अनुसार आता है, उसी अक्षरके अनुसार नाम पड़ता है। प्रत्येक नक्षत्रके चारों चरणोंके अक्षर अवकहडाचक्रमें निश्चित रहते हैं। जैसे—चू चे चो ला अश्विनी, ली लू ले लो भरणी इत्यादि। यदि अश्विनी नक्षत्रके पहले चरणमें जन्म हो तो 'चू' से नाम प्रारम्भ होगा, जैसे चूडामणि आदि, द्वितीय चरणमें जन्म हो तो 'चे' अक्षरसे नाम होगा, जैसे चेतनशर्मा आदि। तृतीय चरणमें जन्म हो तो 'चो' अक्षरसे नाम होगा, जैसे चोलदास आदि और यदि चतुर्थचरणमें जन्म हो तो 'ला' अक्षरसे नाम होगा, जैसे लालमणि आदि। इसी प्रकार अन्य नक्षत्रोंके चरणोंसे भी नामकी कल्पना करनी चाहिये।

व्यावहारिक नाम—

कुछ ऋषियोंने नाक्षत्रिक नामको केवल उपनयन-संस्कारतक ही उपयुक्त बताया है, जिसे माता-पिता ही जानें अन्य नहीं, इसीलिये माता-पिता पुकारनेका कोई सुन्दर-सा नाम रख लेते हैं, यही व्यावहारिक नाम कहलाता है। शास्त्रकारोंने कहा है कि माता-पिताको बालकके मूल नामको गुप्त रखना चाहिये ताकि शत्रु आदिके अभिचारादि कर्मोंसे बालककी रक्षा की जा सके। पिताद्वारा ज्येष्ठ पुत्रका नाम सम्बोधित नहीं होता, ऐसी परम्परा है, अतः कोई व्यवहारका नाम भी रखा जाता है।

नाक्षत्रिक (राशि)-नामका प्राधान्य—

ज्योतिषशास्त्रके अनुसार जो नाम रखा जाता है, उसे नक्षत्राश्रय या नाक्षत्रिक एवं राशिनाम भी कहते हैं। ज्योतिष ग्रन्थोंके अतिरिक्त आयुर्वेदशास्त्रमें भी नाक्षत्रिक नामका ही प्राधान्य बताया गया है। सुश्रुतसंहितामें भी कहा गया है कि **'यद् अभिप्रेतं नक्षत्र नाम वा'** (सुश्रुतसंहिता शारीर० १०।२४) अर्थात् माता-पिताको अभीष्ट हो वह अथवा जिस नक्षत्रमें जन्म हो उस नक्षत्रसे सम्बद्ध नाम रखना चाहिये। मानवगृह्यसूत्र (१।१८।२)-में भी कहा गया है कि नाम ऐसा रखना चाहिये, जो यशोवर्धक या यशका सूचक हो अथवा देवता या नक्षत्रके आश्रित हो—**यशस्यं नामधेयं देवताश्रयं नक्षत्राश्रयं च।** आचार्य चरकने भी कहा है—**'कुमारस्य पिता द्वे नामनी कारयेत् नाक्षत्रिकं नामाभिप्रायिकम्'** (चरक० शारीर० ८।५०) अर्थात् बालकका पिता दो नाम निश्चित करे—एक नक्षत्रसम्बन्धी हो और दूसरा अपनी अभिरुचिके अनुसार हो। वर्तमानमें ज्योतिषके अनुसार नक्षत्रोंके चरणोंके नामपर नाम रखनेकी परम्परा प्रचलित है। नक्षत्रपर रखे गये नामसे ही पता चल जाता है कि यह बालक या बालिका अमुक वर्षके अमुक मास, अमुक तिथि, अमुक वार तथा अमुक समयमें उत्पन्न हुआ है। जन्म-लग्नकुण्डली उसमें सहायक होती है, केवल पुकारका नाम रखनेपर यह सप्रमाण सिद्ध नहीं होता कि यह पुरुष कब उत्पन्न हुआ है। नक्षत्र नामसे चिकित्साका विचार भी आयुर्वेदशास्त्रमें हुआ है। वैद्य जब नामके आधारपर रोगीका जन्मनक्षत्र जान जाता है, तब उसके सामने रोगका स्वरूप भी स्पष्ट हो जाता है। वह जानता है कि अमुक नक्षत्रमें उत्पन्न होनेसे सामान्यतया इस शिशुकी प्रकृति यह है, वह तदनुकूल ही चिकित्सा करता है।

नक्षत्रोंके आधारपर निर्धारित नामको राशिनाम भी कहा जाता है; क्योंकि नक्षत्रोंसे ही राशियाँ बनती हैं। २७ नक्षत्रोंमें बारह राशियाँ

बनती हैं। सवा दो नक्षत्र (नौ चरणों)-की एक राशि होती है, यथा अश्विनीके चार चरण, भरणीके चार चरण और कृत्तिकाका पहला चरण। इस प्रकार ९ चरणोंकी पहली राशि मेष होती है। इसी प्रकार कृत्तिकाके अवशिष्ट तीन चरण, रोहिणीके चार चरण और मृगशिराके पहले दो चरण कुल मिलाकर नौ चरणोंकी 'वृष राशि' होती है। इसी प्रकार आगे भी क्रमशः मिथुन आदि राशियाँ बनती हैं। जो शिशु अश्विनी, भरणी तथा कृत्तिकाके प्रथम चरणमें उत्पन्न होगा, उसकी मेष राशि होगी। आगे वृष आदि राशियाँ होंगी।

वर्णानुसार नामकी व्यवस्था—

नामकरणसंस्कार चारों वर्णोंका होता है। स्त्री एवं शूद्रका अमन्त्रक एवं द्विजातियोंका समन्त्रक होता है। पारस्करगृह्यसूत्र एवं मनुस्मृतिके अनुसार ब्राह्मणका नाम मंगल और आनन्दसूचक तथा शर्मायुक्त, क्षत्रियका नाम बल, रक्षा और शासनक्षमताका सूचक तथा वर्मायुक्त, वैश्यका नाम धन-ऐश्वर्यसूचक, पुष्टियुक्त तथा गुप्तयुक्त और शूद्रका नाम सेवा आदि गुणोंसे युक्त एवं दासान्त होना चाहिये—

शर्म ब्राह्मणस्य वर्म क्षत्रियस्य गुप्तेति वैश्यस्य।

(पा०गृ०सू० १।१७।४)

मङ्गल्यं ब्राह्मणस्य स्यात्क्षत्रियस्य बलान्वितम्।
वैश्यस्य धनसंयुक्तं शूद्रस्य तु जुगुप्सितम्॥
शर्मवद् ब्राह्मणस्य स्याद्राज्ञो रक्षासमन्वितम्।
वैश्यस्य पुष्टिसंयुक्तं शूद्रस्य प्रेष्यसंयुतम्॥

(मनुस्मृति २।३१-३२)

यही बात विष्णुपुराणमें भी बतायी गयी है—

शर्मेति ब्राह्मणस्योक्तं वर्मेति क्षत्रसंश्रयम्।
गुप्तदासात्मकं नाम प्रशस्तं वैश्यशूद्रयोः॥

(विष्णुपुराण ३।१०।९)

जन्मराशिनाम और पुकारनामकी व्यवस्था—

शास्त्रोंमें किस कर्मको राशिनामसे करना चाहिये तथा किस कर्मको पुकारनामसे ग्रहण करना चाहिये, इसपर विचार करते हुए कहा गया है कि विवाहमें, सभी प्रकारके मांगलिक कृत्योंमें, यात्राके मुहूर्तादि विचारमें तथा ग्रहगोचरकी गणना करनेमें जन्मराशि (नक्षत्रनाम)-का प्राधान्य है। इसी प्रकार देश, ग्राम, युद्ध, सेवा तथा व्यावहारिक कार्योंमें नामराशिकी प्रधानता है—

विवाहे सर्वमाङ्गल्ये यात्रायां ग्रहगोचरे।
जन्मराशिप्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत्॥
देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके।
नामराशिप्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत्॥

नामकरण-संस्कारकी बहुत उपयोगिता है, मनुष्यका जैसा नाम होता है, वैसे ही गुण भी होते हैं, यद्यपि इसका अपवाद भी मिलता है, किंतु अपवादसे उत्सर्गका खण्डन नहीं हो सकता। बालकोंका नाम लेकर पुकारनेसे उनके मनपर उस नामका असर पड़ता है और प्रायः उसीके अनुरूप चलनेका प्रयास भी होने लगता है, इसलिये नाममें यदि उदात्त भावना होती है तो बालकोंमें यश एवं भाग्यका अवश्य ही उदय सम्भव है। अजामिल एक पापात्मा था, फिर भी वह अपनी मृत्युके समय अपने पुत्रके 'नारायण' नामके उच्चारणके प्रभावसे सद्गतिको प्राप्त हो गया, इसी कारण अधिकांश लोग अपने पुत्र-पुत्रियोंका नाम भगवन्नामपर रखना शुभ समझते हैं, ताकि इसी बहाने भगवन्नामका उच्चारण हो जाय।

विडम्बना है कि आज पाश्चात्य सभ्यताके अन्धानुकरणमें नामकरण-संस्कारका मूल स्वरूप प्रायः समाप्त ही हो गया है।